**International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7-Issue 6-June-2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |
Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

# भारतीय संगीत के संदर्भ में : परम्पराऐं एवं आधुनिकता

**डॉ. रोजो श्रीवास्तव**
सह आचार्य, संगीत कंठ
राजकीय महारानी सुदर्शन महाविद्यालय, बीकानेर
ईमेल– dr.rosy7sur@gmail.com,

किसी भी देश, समाज, राष्ट्र की कला संस्कृति प्रतिबिम्ब है उन्नति का, उसके चहुँमुखी विकास का। विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति की जड़ें, शाखाऐं जितनी गहरी हैं उतनी ही फैली हुई भी एक विशाल वट वृक्ष के रूप में। हमारी संस्कृति भारतीय परम्पराओं, विचारों एवं सामाजिक मूल्यों को अपने में समाहित किए हुए है। योग, धर्म, दर्शन, कला, संगीत एवं साहित्य जैसे विभिन्न पहलुओं को एक सूत्र में पिरोकर ''वसुधैव–कुटुम्बकम्'' की भावना को चरितार्थ करती है। प्रस्तुत लेख में हम, भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर भारतीय संगीत की पुरातन परम्पराओं एवं आधुनिक परिवेश के स्वरूप की चर्चा करेंगे।

भारतीय संगीत की परम्परा का प्राचीनतम युग वैदिक युग है जो ''पुरूषार्थ–चतुष्टय'' की आधारशिला पर पतिष्ठित हुआ है। भारतीय संगीत यात्रा ने कइ उतार–चढ़ाव देखे हैं। समय के साथ–साथ कई कला संस्कृतियां यहां आई और इसी धारा में विलीन होती चली गई। वैदिक युग से ही संगीत की दो धाराऐं विकसित हुई–पहली मार्गी, दूसरी देशा। मार्गी जो शास्त्र के नियमों में बंधी थी तथा देशी जो लोक में व्याप्त रही।

जब संगीत में कई पीढ़ियों तक एक धारा चलती है तो वह परम्परा का रूप लेती है और उसमें जब धीरे–धीरे परिवेश के अनुसार परिवर्तन होता है तो वह नये आयामों को जन्म देता है। ऐसा नहीं कि प्राचीन अवधारणाओं एवं परम्पराओं का लोप हो जाता है पर नय–नये आविष्कारों के कारण वह मूल स्वरूप को कायम रखते हुए नये–नये संदर्भों में

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7-Issue 6-June-2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |
Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

परिलक्षित होती है यही प्रक्रिया विकास की सूचक है। इसी क्रम में भारतीय शास्त्रीय संगीत विभिन्न रूपों एवं प्रतिमानों के आधार पर विकसित हुआ उन्हीं प्रतिमानों के आधार पर विभिन्न अवधाराणाओं का जन्म हुआ। प्राचीन समय में जो संगीत आध्यात्म का पोषक रहा, वही संगीत मुगलकाल में राजा महाराजाओं की बेड़ियों में जकड़कर रह गया। वर्तमान में जो शास्त्रीय संगीत के नाम से प्रतिष्ठित है वह राज दरबारों में पला, पनपा तथा परम्परावादी प्रवृत्ति का पोषक रहा और इसी प्रवत्ति के कारण शास्त्रीय संगीत में घरानावाद की परम्परा विकसित हुई। घरानावाद की जड़ें भारतीय संगीत में इतनी गहरी हो गई, इतनी समा गई कि वर्तमान समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत की व्याख्या ही घरानेदार गायिकी के माध्यम से की जाती है। यही घरानेदार संगीत मुट्ठीभर लोगों के बीच धरोहर बनकर रह गया। साधारण रूप से कहें तो जनमानस, संगीत सुनने ओर सीखने से वंचित ही रहा। मुगल एवं अंग्रेजों के शासन काल के कारण हमारे संगीत की साम परम्परा, गुरू–शिष्य परम्परा कहीं धूमिल और दिशाहीन होती गई। ऐस समय में हमारे कुछ संगीतज्ञों ने इसके बिखरे स्वरूप को पुस्तकों के माध्यम से एकत्रित किया। इस कार्य श्रृंखला में पं. भातखण्डे, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, बालकृष्ण बुआ, राजा भैया पूंछ वाले आदि संगीतज्ञों का योगदान प्रशंसनीय रहा।

स्वतंत्रता के पश्चात ऐसी शिक्षा पद्धति का निर्माण किया गया जिससे छात्र स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर बन सके। तब संगीत शिक्षा की परम्परा में एक बड़ा परिवर्तन आया और संगीत को विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से जोड़ा गया। संगीत को स्वतंन्त्र विषय के साथ–साथ अन्य विषयों के संदर्भों में गया जैसे योग,दर्शन, धर्म, सौंदर्य शास्त्र, चिकित्सा, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि। व्यवसायिक रूप से भी संगीत विद्यार्थियों के लिए कई नये मार्ग खुले जैसे– शिक्षक, निर्देशक, कार्यक्रम संचालक, रंगमंचीय कलाकार, पार्श्व गायन आदि। इसके अतिरिक्त विभिन्न छात्रवृत्तियां एवं शोध कार्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया गया। विभिन्न संस्थाओं जैसे स्पिकमैके, संगीत नाटक अकादमी के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित किये जाने का प्रावधान रखा गया। उच्च स्तर पर सेमीनार, कॉन्फ्रेंस, कार्यशाला, सम्मेलन, संगीत महोत्सव समय समय पर आयोजित किये गये। इसी

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7-Issue 6-June-2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |
Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

श्रृंखला में संगीत की मासिक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ किया। जिसमें हाथरस से प्रकाशित संगीत मासिक पत्रिका, कला विहार, भैरवी मुख्य है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के समानान्तर ही एक दूसरी धारा– देशी संगीत परम्परा भी विकसित हुई अर्थात लोक संगीत परम्परा जो जनमानस का प्रतिनिधित्व करती है। जो सरल, सहज, स्पष्ट स्वाभाविक, अनुभूतिपूर्ण अभिव्यक्ति का पर्याय है। लोक संगीत की पृष्ठ भूमि में अपेक्षाकृत कम परिवर्तन आया। ऐसा नहीं कि नवीनता नहीं आई, नये प्रयोग नहीं हुए किन्तु वह अपने स्थानीय वैभव, सम्पदा एवं समृद्धि की द्योतक भी रही।

आधुनिकता के परिपेक्ष्य में भारतीय संगीत का गहराई से आंकलन करें तो वैज्ञानिक युग की दौड़ में विद्यार्थी की योग्यता हो उसे सशक्तता प्रदान करती है। इसी माध्यम से वह अपना जीविकोपार्जन कर सकता है, आर्थिक रूप से सक्षम हो सकता है, यही वर्तमान युग की माग है। हमारी भारतीय संगीत परम्परा में प्रारम्भ से ही दो पहलू रहे हैं– शैक्षिक पक्ष एवं व्यवसायिक पक्ष। देखा जाये तो पारम्परिक संगीत जो धर्म मोक्ष का पोषक था वही वर्तमान में अर्थ प्राप्ति तक सीमित होकर रह गया है। इस क्षेत्र में विज्ञापन, चित्रपट संगीत उद्योग, सीडी, कैसेट, रंगमंच के कार्यक्रम, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रम, यू–ट्यूब एवं मीडिया के संसाधन आदि सभी का एक ही लक्ष्य है अर्थ प्राप्ति। टीवी चैनल्स पर सारेगामा, इण्डियन ऑयडल जैसे स्तरीय कार्यक्रम निःसन्देह विद्यार्थियों में, जनमानस में उत्साह, प्रेरणा का संदेश देते हैं। शिक्षण के क्षेत्र में दूरस्थ ''संगीत शिक्षा'' प्रयोगवाद का ही परिणाम कही जा सकती है। ऐसे कार्यक्रम भी संगीत को लोकप्रिय बनाने में, जन साधारण तक पहुंचाने में, अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह करते हैं। इन कार्यक्रमों को एवं संगीत शिक्षण के स्वरूप को हम नकार नहीं सकते हैं। संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु एक स्वतंत्र मंत्रालय की भी स्थापना की गई जो सरकार की ओर से एक सशक्त प्रयास रहा। इसका मुख्य उद्देश्य परस्पर संगीत का आदान–प्रदान रहा, राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह एक ठोस कदम रहा। जिससे भारतीय सगीत में नई संभावनाऐं सामने आई। रोजगार के अतिरिक्त पर्यटन उद्योग में भी भारतीय संगीत अपनी बेजोड़ छवि के लिए प्रसिद्ध है। ''ग्लोबलाईजेशन'' की अवधारणा ने शायद ही किसी क्षेत्र को इतना प्रभावित

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7-Issue 6-June-2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |
Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

किया होगा जितना भारतीय संगीत पर अपना वर्चस्व स्थापित किया है। भारतीय संगीत का पाश्चात्यीकरण गीतों में मैडले, फ्यूजन, ट्रेक रिकॉर्डिंग्स जैसी सशक्त कड़ियां, परम्परा एवं प्रयोगवाद का सर्वोत्तम उदाहरण है। अतः यूं कह सकते हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा में नित नये प्रयोग किये गये जिसका परिणाम बहुत ही प्रशंसनीय एव लाभदायक रहा। यद्यपि संगीत के क्षेत्र में आधुनिकता के प्रभाव ने परम्परागत सोच को एक चुनौती दी है किन्तु यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी की संगीत की गुणवत्ता एवं गुणात्मकता दोनों ही विकसित हुए। परम्परा एवं प्रयोग का एक अनूठा सामंजस्य, समन्वय जो भारतीय संगीत में देखने को मिलता है ऐसा अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं है।